प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2021-22 सत्र - एक

विषय हिंदी (कोड 085)

समय:1घंटा30मिनट **पूर्णांक : 40**

सामान्य निर्देश:

- ***इस प्रश्न पत्र में तीन खंड हैं- खंड 'क', 'ख' और 'ग'**
- ***खंड 'क' में कुल 2 प्रश्न पूछे गए हैं। दोनों प्रश्नों के कुल 20 उपप्रश्न दिए गए हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए कुल 10 उपप्रश्नों के उत्तर दीजिए।**
- ***खंड 'ख' में 4 प्रश्न हैं तथा इन सभी के 21 उपप्रश्न हैं। इनमें से निर्देशानुसार 16 उपप्रश्नों के उत्तर दीजिए।**
- **खंड 'ग' में कुल 3 प्रश्न हैं तथा 14 उपप्रश्न सम्मिलित हैं सभी उपप्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

खंड'क'अपठित गद्यांश **(10 अंक)**

प्रश्न 1. नीचे दो गद्यांश दिए गए हैं। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए. **(1x5-5)**

यदि आप इस गद्यांश का चयन करते हैं तो कृपया उत्तर पुस्तिका में लिखिए कि आप प्रश्न संख्या 1 में दिए गए गद्यांश-1 पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख रहे हैं।

अच्छा नागरिक बनने के लिए भारत के प्राचीन विचारकों ने कुछ नियमों का प्रावधान किया है। इन नियमों में वाणी और व्यवहार की शुद्धि, कर्तव्य और अधिकार का समुचित निर्वाह, शुद्धतम पारस्परिक सद्भाव और सेवा की भावना आदि नियम बहुत महत्वपूर्ण माने गए हैं। ये सभी नियम यदि एक व्यक्ति के चारित्रिक गुणों के रूप में भी अनिवार्य

माने जाएँ तो उसका अपना जीवन सुखी और आनंदमय हो सकता है। सभी गुणों का विकास एक बालक में यदि उसकी बाल्यावस्था से ही किया जाए तो वह अपने देश का श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है। इन गुणों के कारण वह अपने परिवार, आस पड़ोस, विद्यालय में अपने सहपाठियों एवं अध्यापकों के प्रति यथोचित व्यवहार कर सकेगा।

वाणी एवं व्यवहार की मधुरता सभी के लिए सुखदायक होती है, समाज में हार्दिक सद्भाव की वृद्धि करती है किंतु अहंकारहीन व्यक्ति ही स्निग्ध वाणी और शिष्ट व्यवहार का प्रयोग कर सकता है। अहंकारी और दंभी व्यक्ति सदा अशिष्ट वाणी और व्यवहार का अभ्यासी होता है। जिसका परिणाम यह होता है कि ऐसे आदमी के व्यवहार से समाज में शांति और सौहार्द का वातावरण नहीं बनता।

जिस प्रकार एक व्यक्ति समाज में रहकर अपने व्यवहार से कर्तव्य और अधिकार के प्रति सजग रहता है,उसी तरह देश के प्रति भी उसका व्यवहार कर्तव्य और अधिकार की भावना से भावित रहना चाहिए। उसका
कर्तव्य हो जाता है कि न तो वह स्वयं कोई ऐसा काम करे और न ही दूसरों को करने दे, जिसमें देश के सम्मान, संपत्ति और स्वाभिमान को ठेस लगे।
समाज एवं देश में शांति बनाए रखने के लिए धार्मिक सहिष्णुता भी बहुत आवश्यक है। यह वृत्ति तभी आ सकती है जब व्यक्ति संतुलित व्यक्तित्व का हो। वह आंतरिक व बाहरी संघर्ष से परे सामाजिकता की अनुभूति से परिपूर्ण व्यक्तित्व होना चाहिए।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए।

(1)गद्यांश के संदर्भ में अच्छा नागरिक बनने के लिए नियमों का प्रावधान आवश्यक है, क्योंकि यह -

(क) स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है जिससे वातावरण **को शांति से परिपूर्ण करता है।**

(ख) व्यक्तित्व को निखारकर जीवन को आमोद - प्रमोद से परिपूर्ण करता है।

(ग) व्यक्तित्व को निखारकर जीवन को सुख और मंगलकामना से परिपूर्ण करता है।

(घ) व्यक्ति को अहंकार, स्निग्ध वाणी और शिष्ट व्यवहार से परिपूर्ण करता है।

(2) वाणी एवं व्यवहार की मधुरता सभी के लिए सुखदायक होती है। इस कथन के लिए उपयुक्त तर्क है -

(क) देश के सम्मान, संपत्ति और स्वाभिमान को ठेस पहुँचती है ।

(ख) देश व समाज में शांति और सौहार्द का वातावरण नहीं बनता।

(ग)कर्तव्य और अधिकार का समुचित निर्वाह बहुत आवश्यक है।

(घ) समाज में हार्दिक सद्भाव की वृद्धि और सुख की प्रतिष्ठा होती है।

(3) अहंकारी और दंभी व्यक्ति सदा अभ्यासी होता है -

(क) अशिष्ट वाणी और व्यवहार का

(ख) मधुर एवं अशिष्ट व्यवहार का

(ग) **अशिष्ट** वाणी एवं व्यवहार की शुद्धि का

(घ) स्निग्ध वाणी और **अ**शिष्ट व्यवहार का

(4)संतुलित व्यक्तित्व से तात्पर्य है -

(क) आंतरिक व बाहरी संघर्ष से संपूर्ण सामाजिकता की अनुभूति से परिपूर्ण व्यक्तित्व

(ख) देश में पूर्णतः आदर्श नागरिक का व्यवहार करने वाला सुखदायक व्यक्तित्व

(ग) आंतरिक व बाहरी संघर्ष से रहित संपूर्ण सामाजिकता की अनुभूति से परिपूर्ण व्यक्तित्व

(घ) कर्तव्य और अधिकार के प्रति सजग रहने वाला भावुक प्रवृत्ति से परिपूर्ण व्यक्तित्व

(5) धार्मिक सहिष्णुता की स्थापना आवश्यक है क्योंकि इससे -

(क) अधिकार और कर्तव्य पर विजय प्राप्त हो जाएगी।

(ख) देश की संपत्ति को नुकसान नहीं पहुँचेगा ।

(ग) भारतीय संविधान की प्रतिष्ठा बनी रहेगी ।

(घ) समाज एवं देश में शांति व्यवस्था बनी रहेगी ।

अथवा

यदि आप इस गद्यांश का चयन करते हैं तो कृपया उत्तर पुस्तिका में लिखिए कि आप प्रश्न संख्या 1 में दिए गए गद्यांश-2 पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख रहे हैं।

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए।

बड़ा बनने के लिए हमें विशाल काम करने की ज़रूरत नहीं होती, बल्कि प्रत्येक काम में विशालता के चिह्न खोजने पड़ते हैं। अपने अंतर्मन में सदैव जिज्ञासा को जन्म देना होता है। दुनिया में ज्ञान का जो बोलबाला है, उसमें हमारे कौतूहल की केंद्रीय भूमिका है। अल्बर्ट आइंस्टीन ने एक बार अपने साक्षात्कार में कहा था कि हमारी जिज्ञासा ही हमारे

अस्तित्व का आधार है। बिना प्रश्न के हमारे जीवन में न गति आएगी और न कोई रस होगा जब हम चिंतन करते हैं, तब नई बातें सामने आती हैं। सवाल करने का ही परिणाम है कि नई तकनीक ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी चीजें आज दुनिया में आ रही हैं । जब हम कहते हैं क्यों, कैसे, क्या, तब हमारे अंदर की स्नायु प्राण ऊर्जा और संकल्प एक नई गति और उत्साह के साथ नवीनता की यात्रा करने लगते हैं।

हमें इस दुनिया की इतनी आदत पड़ चुकी है कि - लीक से हटकर सोचना नहीं चाहते। कोई विभिन्नता नहीं, न ही कोई नवीनता है। यह कैसा जीवन है, जिसमें कोई कौतूहल नहीं कोई आश्चर्य नहीं ? इस जगत में हमारी स्थिति एक कीटाणु या विषाणु की तरह है, जो अपनी सुखमयी व्यवस्था में पड़े रहते हैं। लेकिन जो स्वतंत्र होते हैं, वे हृदय की आवाज़ सुनते हैं। जो बड़ा होना चाहते हैं, इस दुनिया और इसकी प्रत्येक घटना, वस्तु एवं स्थिति पर अपना आश्चर्य प्रकट करते हैं। प्रत्येक घटना और वस्तु से परे हटकर सोचने और उसको देखने की कोशिश जो करते हैं, यही बड़ा बनते हैं। जिज्ञासु मन और बुद्धि ही दर्शन और विज्ञान की दुनिया बनाते हैं।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों का चयन कीजिए।

(1) प्रत्येक काम में विशालता के चिह्न खोजने से लेखक का अभिप्राय है -

(क) बड़ी सोच व्यक्ति को बड़ा बनने की प्रेरणा देती है।

(ख) प्रत्येक काम को महत्व देकर गहराई से समझें।

(ग) प्रत्येक काम को करने के लिए सदैव तत्पर रहें।

(घ) प्रत्येक काम का **आयोजन बड़े पैमाने पर** करें।

(2)अस्तित्व शब्द का अर्थ है -

(क)विद्यमानता

(ख) जिज्ञासु प्रवृत्ति

(ग) गतिमान

(घ) नवीनता

(3)नवीनता की यात्रा करने से हम परंपरागत प्रणालियों से विमुख हो रहे हैं। नवीनता के पक्षधर के रूप में इसकी आवश्यकता के लिए उपयुक्त तर्क है-

(क) हमारी मानसिक स्थिति एक कीटाणु या विषाणु की तरह है।

(ख)हमारे शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक व राष्ट्रीय विकास के लिए है।

(ग) जो स्वतंत्र मानसिकता वाले होते हैं, वे दूसरों की आवाज़ सुनते हैं।

(घ) जब हम चिंतन करते हैं, तब नई बातें सामने आती हैं।

(4)लीक से हटकर सोच को विकसित करने के लिए आवश्यक है -

(क)सुखमय व्यवस्था

(ख)हृदय की आवाज़ सुनना

(ग) अंतर्मन में सदैव जिज्ञासा

(घ) दर्शन और विज्ञान की दुनिया

(5)जिज्ञासा ही हमारे अस्तित्व के आधार की परिचायक है क्योंकि यह -

(क) **व्यक्ति को नए जमाने का वैज्ञानिक दर्शाती है।**

(ख) **शारीरिक व मानसिक रूप से क्रियाशील रखती है।**

(ग) **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की उपयोगिता दर्शाती है।**

(घ) **विश्वव्यापी स्तर पर स्थिति निर्धारित करती है।**

प्रश्न 2 नीचे दो गद्यांश दिए गए हैं। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए. **(1x5-5)**

यदि आप इस गद्यांश का चयन करते हैं तो कृपया उत्तर पुस्तिका में लिखिए कि आप प्रश्न संख्या 2 में दिए गए गद्यांश-1 पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख रहे हैं।

जानवरों में गधा सबसे बुद्धिहीन समझा जाता है हम जब किसी आदमी को पहले दर्जे का बेवकूफ कहना चाहते हैं तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ है या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याई हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है, लेकिन गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो उसे मारो, चाहे जैसी खराब सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी। वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो; पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद छाया रहता है।

सुख-दुख, हानि-लाभ किसी दशा में भी उसे बदलते नहीं देखा। ऋषि- मुनियों के जितने गुण हैं, वह सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं, पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सद्‌गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा। कदाचित सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है।

(1) लेखक यह निश्चय नहीं कर पाता कि गधा बेवकूफ है या सीधा क्योंकि उसके अनुसार -

(क) गधा अपने - पराये की भावना से परे है

(ख) गधा क्रोध व कुलेल नहीं करता है

(ग) गधा सीधा व सहिष्णु होता है

(घ) गधे के चेहरे पर **हर्ष व** विषाद होता है

(2) गधे में ऋषि-मुनियों के कौन-कौन से गुण देखने को मिलते हैं ?

(क) जप-तप करना

(ख) समानता का भाव

(ग) असंतोष की भावना

(घ) कुलेल करना

(3) आशय स्पष्ट कीजिए-'उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद छाया रहता है।'

(क) गधा सदैव चुप रहता है, उसे खुश होते हुए कभी नहीं देखा गया

(ख) गधे को बहुत बोझ ढोना पड़ता है, इसी कारण वह थक जाता है

(ग) आदमी द्‌वारा दुर्व्यवहार करने व बेवकूफ कहने के कारण गधा दुखी है

(घ) गधे के प्रसन्न मुख पर सदा स्थिर संतोष छाया रहता है

(4)गद्‌यांश में प्रयुक्त शब्दों ' छाया, निश्चय,अनायास' के लिए क्रमशः उचित विलोम शब्द हैं -

(क)असंतोष, अनिश्चय, प्रयास

(ख) शीतलता , अनिश्चय, सायास

(ग)धूप, अनिश्चय, सायास

(घ) वृक्ष, अनिश्चय, प्रयास

(5) 'सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है।' लेखक का यह कथन व्यक्त करता है कि -

(क) **उनका** गधे के प्रति गहरा लगाव **है** ।

(ख) समाज में गधे को भी स्थान मिलना **चाहिए।**

(ग) गधा निरापद सहिष्णु, सीधा-सादा होता है।

(घ) वे सद्गुणों के अनादर के लिए चिंतित हैं ।

अथवा

यदि आप इस गद्यांश का चयन करते हैं तो कृपया उत्तर पुस्तिका में लिखिए कि आप प्रश्न संख्या **2** में दिए गए गद्यांश-**2** पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख रहे हैं।

नीचे दिए गए गद्द्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए
साहित्य की शाश्वतता का प्रश्न एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। क्या साहित्य शाश्वत होता है? यदि हाँ, तो किस मायने में? क्या कोई साहित्य अपने रचनाकाल के सौ वर्ष बीत जाने पर भी उतना ही प्रासंगिक रहता है, जितना वह अपनी रचना के समय था? अपने समय या युग का निर्माता साहित्यकार क्या सौ वर्ष बाद की परिस्थितियों का भी युग-निर्माता हो सकता है। समय बदलता रहता है, परिस्थितियाँ और भावबोध बदलते हैं, साहित्य बदलता है और इसी के समानांतर पाठक की मानसिकता और अभिरुचि भी बदलती है। अतः कोई भी कविता अपने सामयिक परिवेश के बदल जाने पर ठीक वही उत्तेजना पैदा नहीं कर सकती, जो उसने अपने रचनाकाल के दौरान की होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि एक विशेष प्रकार के साहित्य के श्रेष्ठ अस्तित्व मात्र से वह साहित्य हर युग के लिए उतना ही विशेष आकर्षण रखे, यह आवश्यक नहीं है। यही कारण है कि वर्तमान युग में इंगला पिंगला, सुषुम्ना, अनहद नाद आदि पारिभाषिक शब्दावली मन में विशेष भावोत्तेजन नहीं करती। साहित्य की श्रेष्ठता मात्र ही उसके नित्य आकर्षण का आधार नहीं है। उसकी श्रेष्ठता का युगयुगीन आधार हैं,वे जीवन मूल्य तथा उनकी अत्यंत कलात्मक अभिव्यक्तियाँ जो मनुष्य की स्वतंत्रता तथा उच्चतर मानव-विकास के लिए पथ-प्रदर्शक का काम करती हैं। पुराने साहित्य का केवल वही श्री-सौंदर्य हमारे लिए ग्राहय होगा, जो नवीन जीवन-मूल्यों के विकास में सक्रिय सहयोग दे अथवा स्थिति रक्षा में सहायक हो। कुछ लोग साहित्य की सामाजिक प्रतिबद्धता को अस्वीकार करते हैं। वे मानते हैं कि साहित्यकार निरपेक्ष होता है और उस पर कोई भी दबाव आरोपित नहीं होना चाहिए। किंतु वे भूल जाते हैं कि साहित्य के निर्माण की मूल प्रेरणा मानव-जीवन में ही विद्यमान रहती है। जीवन के लिए ही उसकी सृष्टि होती है। तुलसीदास जब स्वांतः सुखाय काव्य-रचना करते हैं, तब अभिप्राय यह नहीं रहता कि मानव-समाज के लिए इस रचना का कोई उपयोग नहीं है, बल्कि उनके अंतःकरण में संपूर्ण संसार की सुख भावना एवं हित कामना सन्निहित रहती है। जो साहित्यकार अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को व्यापक लोक जीवन में सन्निविष्ट कर देता है, उसी के हाथों स्थायी एवं प्रेरणाप्रद साहित्य का सृजन हो सकता है।

(1) साहित्य की श्रेष्ठता का निर्धारण सुनिश्चित **करता है कि वह**

(क) व्यक्ति **को बहुमुखी प्रतिभा का धनी बनाता है।**

(ख) **लोक व्यवहार की पराकाष्ठा पर प्रतिक्रिया देता है।**

(ग) सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विरासत को बाधित करता है।

(घ) पथ-प्रशस्त कर मूल्यों का समावेशन करके कला भाव जगाता है।

(2) नवीन जीवन- मूल्यों के विकास में सक्रिय सहयोग से आशय है-

(क) स्वांतः सुखाय की कामना कर आगे बढ़ना

(ख) श्री-सौंदर्य को प्राथमिकता देकर आगे बढ़ना

(ग) नवाचार व मूल्यों को आत्मसात कर आगे बढ़ना

(घ) वर्तमान में साहित्य के माध्यम से आगे बढ़ना

(3) 'कोई साहित्य अपने रचना काल के सौ वर्ष बीत जाने पर भी उतना ही प्रासंगिक रहता है।'

कथन के आधार पर उचित तर्क है -

(क) साहित्य की श्रेष्ठता मात्र ही उसके नित्य आकर्षण का आधार नहीं है।

(ख) संपूर्ण **साहित्य** का स्थायी व स्पष्ट आधार नहीं है**।**

(ग) लोक कल्याणकारी , स्थायी एवं प्रेरणाप्रद साहित्य होने की दशा में

(घ) पारिभाषिक शब्दावली द्वारा स्पष्टीकरण करने की दशा में

(4)'साहित्यकार निरपेक्ष होता है और उस पर कोई भी दबाव आरोपित नहीं होना चाहिए।' कथन किस मनोवृत्ति को प्रकट करता है -

(क) सामाजिक कार्यकर्ता की विचारधारा

(ख)साहित्य की शाश्वत क्रियाशील विचारधारा

(ग)समाज के प्रति वचनबद्धता का अभाव

(घ) निरपेक्ष व्यक्तियों की सकारात्मकता

(5)गद्यांश में प्रयुक्त मानवजीवन समस्त पद का विग्रह एवं समास भेद होगा -

(क) मानव या जीवन - द्वंद्व समास

(ख) मानव का जीवन- तत्पुरुष समास

(ग) मानव रूपी जीवन- द्विगु समास

(घ) मानव जो जीवन जीता है-अव्ययीभाव समास

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण

प्रश्न 3 निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्ही चार प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए - **(1x4 =4)**

(1)' ततााँरा की तलवार एक विलक्षण रहस्य थी।' इस वाक्य में से संज्ञा पदबंध छाँटिए।

(क) तलवार एक

(ख) तताँरा की तलवार

(ग) रहस्य थी

(घ) विलक्षण रहस्य

(2)'कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे।'

रेखांकित पदबंध का प्रकार है -

(क) सर्वनाम पदबंध

(ख) क्रिया पदबंध

(ग) क्रियाविशेषण पदबंध

(घ) विशेषण पदबंध

(3)बढ़ती हुई आबादियों ने समंदर को पीछे सरकाना शुरू कर दिया है। रेखांकित पदबंध का प्रकार है -

(क) विशेषण पदबंध

(ख) सर्वनाम पदबंध

(ग) क्रिया पदबंध

(घ) संज्ञा पदबंध

(4) तताँरा दिनभर के अथक परिश्रम के बाद समुद्र किनारे टहलने निकल पड़ा।

रेखांकित पदबंध का भेद है-

(क) क्रिया विशेषण पदबंध

(ख) विशेषण पदबंध

(ग) क्रिया पदबंध

(घ) संज्ञा पदबंध

(5) ततााँरा एक <u>नेक और मददगार</u> व्यक्ति था। वाक्य में रेखांकित पदबंध का भेद है -

(क) विशेषण पदबंध

(ख) संज्ञा पदबंध

(ग) क्रिया पदबंध

(घ) क्रिया विशेषण पदबंध

प्रश्न **4** निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्ही चार प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए - **(1x4 =4)**

(1)बड़े भाई साहब ने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था जब मैंने शुरू किया था ।रचना की दृष्टि से वाक्य है-

(क) सरल वाक्य

(ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्रित **वाक्य**

(घ)विधानवाचक वाक्य

(2) वामीरो कुछ सचेत हुई और घर की तरफ़ दौड़ी। इस संयुक्त वाक्य को परिवर्तित करने पर सरल वाक्य होगा -

(क) जैसे ही वामीरो सचेत हुई वैसे ही वह घर की तरफ़ दौड़ी।

(ख) वामीरो कुछ सचेत हुई और वह घर की तरफ़ दौड़ी।

(ग) वामीरो कुछ सचेत होने पर घर की तरफ़ दौड़ी।

(घ) **सचेत** वामीरो **हुई तथा** घर की तरफ़ दौड़ी।

(3) निम्नलिखित वाक्यों में मिश्र वाक्य है -

(क) मेरे और भाई साहब के बीच अब केवल एक दरजे का अंतर और रह गया।

(ख) आखिर आदमी को कुछ तो अपनी पोज़ीशन का खयाल रखना चाहिए।

(ग) जबसे माता जी ने प्रबंध अपने हाथ में ले लिया है, तब से घर में लक्ष्मी आ गई है।

(घ) मेरे रहते तुम बेराह न चलने पाओगे।

(4)' सूर्य निकला और प्रकाश हो गया।' रूपांतरित करने पर वाक्य का सरल रूप होगा -

(क) जैसे ही सूर्य निकला वैसे ही प्रकाश हो गया।

(ख) सूर्य निकलते ही प्रकाश हो गया।

(ग) जब सूर्य निकलता है तब प्रकाश होता है।

(घ) सूर्य निकला अतएव प्रकाश हो गया ।

(5) 'एक ज़माना था कि लोग आठवाँ दरजा पास करके नायब तहसीलदार हो जाते थे।'

रचना की दृष्टि से वाक्य है -

(क) सरल वाक्य

(ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य

(घ) सामान्य वाक्य

प्रश्न 5 निम्नलिखित छह भागों में से किन्हीं चार प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए - **(1×4 =4)**

(1)'गुरुदक्षिणा' शब्द के सही समास विग्रह का चयन कीजिए।

(क) गुरु से दक्षिणा- तत्पुरुष समास

(ख) गुरु का दक्षिणा- तत्पुरुष समास

(ग)गुरु की दक्षिणा -तत्पुरुष समास

(घ) गुरु के लिए दक्षिणा -तत्पुरुष समास

(2)'यथासमय' शब्द किस समास का उदाहरण है -

(क) कर्मधारय समास

(ख) बहुव्रीहि समास

(ग) अव्ययीभाव समास

(घ) तत्पुरुष समास

(3)'अष्टाध्यायी'शब्द के लिए सही समास विग्रह का चयन कीजिए।

(क) आठ अध्यायों का समाहार- द्विगु समास

(ख) आठ हैं जो अध्याय - बहुव्रीहि समास

(ग) अष्ट और अध्याय - द्वंद्व समास

(घ) अष्ट के अध्याय - तत्पुरुष समास

(4)’आशा को लाँघ कर गया हुआ’ का समस्तपद है -

(क)आशालाँघ

(ख)आशातीत

(ग) आशावान

(घ) आशागत

(5)’सज्जन’ समस्तपद का विग्रह होगा -

(क)सद् है जो जन

(ख)सत् है जो जन

(ग) अच्छा है जो पुरुष

(घ) सत् के समान जन

(6) 'बाकायदा' शब्द के लिए सही समास विग्रह का चयन कीजिए।

(क) कायदे के अनुसार - अव्ययीभाव समास

(ख) कायदे के बिना- अव्ययीभाव समास

(ग) कायदे ही कायदे - अव्ययीभाव समास

(घ) कायदे के द्वारा कृत - तत्पुरुष समास

प्रश्न **6** निम्नलिखित पाँच में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए तथा सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए - **(1×4 =4)**

(1)’अंधे के हाथ बटेर लगना’ का अर्थ है

(क) अच्छा भाग्य

(ख) अच्छी वस्तु प्राप्त होना

(ग) भाग्यवश अच्छी वस्तु प्राप्त होना

(घ) अंधे व्यक्ति को बटेर प्राप्त होना

(2) सच्चे शूरवीर देश की रक्षा में प्राणों की...........। रिक्त स्थान की पूर्ति उचित मुहावरे से कीजिए -

(क) बाज़ी लगा देते हैं

(ख) जान लगा देते हैं।

(ग) ताकत लगा देते हैं

(घ) सुरक्षा लगा देते हैं

(3)'गागर में सागर भरना' मुहावरे का सही अर्थ है

(क) कुछ न करना

(ख) थोड़े में बहुत कुछ कह देना

(ग) गागर में सागर का पानी भर देना

(घ) लंबी-चौड़ी बातें करना

(4) कभी नौकरी ढूँढने निकलोगे तो............... I रिक्त स्थान की पूर्ति उचित मुहावरे से कीजिए -

(क) ज़मीन पर पाँव न रखना

(ख) आटे - दाल का भाव मालूम होगा

(ग) दीवार खड़ी करना

(घ) नाम निशान मिटाना

(5)विद्यालय के वार्षिकोत्सव में इतने अधिक काम थे कि उन्हें निपटाते - निपटाते..........................। उपयुक्त मुहावरे से रिक्त स्थान भरिए।

(क) दीन-दुनिया से गया

(ख) शब्द चाट डाला

(ग) दाँतों पसीना आ गया

(घ) डेरा डाल दिया

खंड - ग (पाठ्यपुस्तक)

प्रश्न 7 निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए-**(1x4 =4)**

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,

गिरधारी लाला म्होंने चाकर राखोजी I

चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ I

बिन्दरावन री कुंज गली में, गोविन्द लीला गास्यूँ ।

चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।

भाव भगत जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।

(1) मीरा कृष्ण से क्या प्रार्थना कर रही हैं?

(क) उनकी पीड़ा दूर करने की

(ख) सेविका के रूप में स्वीकार करने की

(ग) प्रेमिका के रूप में स्वीकार करने की

(घ) उन्हें अपने पास रखने की

(2) कृष्ण की सेविका बनकर मीरा क्या करना चाहतीं हैं ?

(क) बाग सजाना, दर्शन करना, गीत गाना

(ख) प्रशंसा के गीत गाना और गोकुल में रहना

(ग) रोज़ उठकर उनके दर्शन करना और रोना

(घ) उनकी याद में रोना, दर्शन करना, गीत गाना

(3)मीरा वृंदावन की गलियों में -

(क) कृष्ण से मिलना चाहती हैं

(ख) कृष्ण का गुणगान करना चाहती हैं।

(ग) कृष्ण को उलाहना देना चाहती हैं।

(घ) कृष्ण की प्रतीक्षा करना चाहती हैं।

(4)कृष्ण की भाव-भक्ति में डूबना किसके समान है?

(क) सुख और वैभव के समान

(ख) मान-सम्मान के समान

(ग) धन-दौलत के समान

(घ) धन **और सम्मान** के समान

प्रश्न 8 निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए- **(1x5 =5)**

ग्वालियर में हमारा एक मकान था। उस मकान के दालान में दो रोशनदान थे। उसमें कबूतर के एक जोड़े ने घोंसला बना लिया था। एक बार बिल्ली ने उचककर दो में से एक अंडा तोड़ दिया। मेरी माँ ने देखा तो उसे दुख हुआ। उसने स्टूल पर चढ़कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। लेकिन इस कोशिश में दूसरा अंडा उसी के हाथ से गिरकर टूट गया। कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। उनकी आँखों में दुख देखकर मेरी माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस गुनाह को खुदा से मुआफ़ कराने के लिए उसने पूरे दिन रोज़ा रखा। दिनभर कुछ खाया-पिया नहीं, सिर्फ़ रोती रही और बार-बार नमाज पढ़-पढ़कर खुदा से इस गलती को मुआफ़ करने की दुआ माँगती रही।

(1)लेखक की माँ किस बात से दुखी थी ?

(क) घर में कबूतरों ने घोंसला बना लिया था।

(ख) कबूतर के दोनों अंडे टूट गए थे।

(ग) कबूतर अंडों को छोड़कर चले गए थे।

(घ) बिल्ली अंडों को खा गई थी।

(2) लेखक की माँ खुदा से किस गुनाह को माफ कराना चाहती थी ?

(क) पहला अंडा तोड़ने का गुनाह

(ख) बिल्ली को मारने का गुनाह

(ग) दूसरा अंडा टूट जाने का गुनाह

(घ) कबूतर का घोंसला तोड़ने का गुनाह

(3) प्रस्तुत गद्यांश से पता चलता है कि लेखक की माँ अत्यधिक

(क) संवेदनशील थीं

(ख) स्वार्थी थीं

(ग) कमजोर थीं

(घ) डरपोक थीं

(4) गद्यांश में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द प्रत्यय के मेल से नहीं बना है?

(क) गुनाह

(ख) परेशानी

(ग) रोशनदान

(घ) दिनभर

(5)माँ की आँखों में आँसू आ गए थे क्योंकि -

(क) कबूतर का अंडा बिल्ली ने तोड़ दिया था।

(ख)कबूतर का अंडा लेखक की माँ से टूट गया था।

(ग) लेखक की पत्नी ने कबूतर का अंडा तोड़ दिया था।

(घ) कबूतर की आँखों में दुख देखकर व्यथित हो गई थीं।

प्रश्न 9 निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प छाँटकर दीजिए- **(1x5 =5)**

वामीरो के रुदन स्वरों को सुनकर उसकी माँ वहाँ पहुँची और दोनों को देखकर आग बबूला हो उठी। सारे गाँववालों की उपस्थिति में यह दृश्य उसे अपमानजनक लगा। इस बीच गाँव के कुछ लोग भी वहाँ पहुँच गए। वामीरो की माँ क्रोध में उफन उठी। उसने तताँरा को तरह-तरह से अपमानित किया। गाँव के लोग भी तताँरा के विरोध में आवाज़ें उठाने लगे। यह तताँरा के लिए असहनीय था। वामीरो भी रोए जा रही थी। तताँरा भी गुस्से से भर उठा। उसे जहाँ विवाह की निषेध परंपरा पर क्षोभ था वहीं अपनी असहायता पर खीझ। वामीरो का दुख उसे और गहरा कर रहा था। उसे मालूम न था कि क्या कदम उठाना चाहिए। अनायास उसका हाथ तलवार की मूठ पर जा टिका। क्रोध में तलवार निकाली और कुछ विचार करता रहा। क्रोध लगातार अग्नि की तरह बढ़ रहा था। लोग सहम उठे, एक सन्नाटा सा खिंच गया। जब कोई राह न सूझी तो क्रोध का शमन करने के लिए उसने शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा। वह पसीने से नहा उठा। सब घबराए हुए थे। वह तलवार को अपनी तरफ़ खींचते-खींचते दूर तक पहुँच गया। वह हाँफ रहा था। अचानक जहाँ तक लकीर खिंच गई थी, वहाँ एक दरार होने लगी। मानो धरती दो टुकड़ों में बँटने लगी हो।

(1) गाँव के लोग तताँरा के विरोध में आवाजें क्यों उठा रहे थे ?

(क) वे तताँरा को अपमानित करना चाहते थे।

(ख) वे गाँव की निषेध परंपरा के पक्ष में थे।

(ग) गाँव की रीति के विरोध में थे

(घ) तताँरा को पशु पर्व में शामिल नहीं करना चाहते थे।

(2) तताँरा ने अपने क्रोध का शमन करने के लिए क्या किया ?

(क) वामीरो की माँ को बुरा-भला सुनाया

(ख) सब गाँववालों के विरोध में आवाज़ उठाई

(ग) अपनी तलवार से उपस्थित लोगों पर वार

(घ) अपनी तलवार को धरती में गाड़ दिया

(3) वामीरो की माँ के गुस्से का कारण क्या था ?

(क) गाँववालों का विरोध

(ख) पशु पर्व का आयोजन

(ग) वामीरो का रोना

(घ) तताँरा का तलवार खींचना

(4) 'लोग सहम उठे, एक सन्नाटा-सा खिंच गया।' **लोगों का सहम जाना दर्शाता है कि वे -**

(क) **विलक्षण** दैवीय तलवार को देखने लग गए थे।

(ख)किसी भावी दुष्परिणाम की आशंका से ग्रसित थे।

(ग) जानते थे कि द्वीप दो भागों में बँट जाएगा।

(घ) तताँरा-वामीरो के विवाह के लिए सहमत हो गए थे।

(5) प्रस्तुत गद्यांश में किस घटना का वर्णन है ?

(क) वामीरो की त्यागमयी मृत्यु का

(ख) निकोबार द्वीप के दो भागों में बँटने का

(ग)तताँरा-वामीरो की प्रथम मुलाकात का

(घ) तताँरा के आत्मीय स्वभाव का